नैक द्वारा 'बी' ग्रेड प्रत्यायित

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

फोन नं0 : 0551–6827552, 2105416

मो. : 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक : ..... दिनांक : 25.05.2016

प्रकाशनार्थ

योगीराज बाबा गम्भीरनाथ स्मृति साप्ताहिक व्याख्यानमाला का पाँचवा दिन

व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है। समूह और समाज में मौलिक अन्तर है। सुसंस्कृति समूह समाज कहलाता है। समाज से अलग किसी व्यक्ति का अस्तित्व नहीं है। ऐसे में शिक्षा और समाज के बीच अन्योन्याश्रित सम्बन्ध होता है। समाज स्वयं शिक्षा की एक महत्वपूर्ण पाठशाला है। अतः समाजशास्त्रीय आधार सुनिश्चित किए बगैर बनायी गई शिक्षा नीति एवं दी जाने वाली शिक्षा औचित्यहीन हो जाती है। वास्तविक शिक्षा वही है जो समकालीन समाज की आवश्यकताओं और उसके लक्ष्यानुरूप अपनी भूमिका सुनिश्चित करे। उक्त बातें महाराणा प्रताप पी0जी0 कालेज जंगल धूसण में **योगीराज बाबा गम्भीरनाथ स्मृति सप्त दिवसीय व्याख्यान–माला** के पाचँवे दिन **'शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार'** विषय पर बोलते हुए दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर **डॉ सरिता पाण्डेय** ने कही।

डॉ सरिता पाण्डेय ने कहा कि सामाजिक सत्ता बहुत ताकतवर होती है, वह शिक्षानीति को अपने अनुसार ढाल लेती है, जबकि हमें जैसा समाज बनाना हो उस अनुरूप शिक्षानीति बनानी होती है। जिस देश में सामाजिक सत्ता एवं शिक्षा नीति में समन्वय होता है, वह राष्ट्र अपनी शिक्षा के बल पर समाज की दिशा तय करता है। अतः राष्ट्रीय–सामाजिक विकास की सही दिशा के लिए आवश्यक है कि शिक्षानीति बनाने वाले विद्वान समाज–सत्ता की ताकत और उसकी दिशा तथा युवानुकूल सामाजिक परिवर्तन की दिशा को निरपेक्ष भाव से समझने वाले हों सही समझ के साथ बनायी गयी शिक्षानीति सामाजिक परिवर्तन की ताकत रखता है अन्यथा वह सामाजिक सत्ता का गुलाम बन जाता है और समाज के अनुरूप स्वयं अपनी भूमिका तय कर लेता है। वस्तुतः शिक्षा वही प्रभावी है जो लोक कल्याण की दिशा में सामाजिक परिवर्तन की ताकत रखती है। शिक्षा तभी व्यक्ति और समाज का रचनात्मक निर्माण कर पाएगी जब वह स्वतन्त्र रूप में कार्य करे।

डॉ सरिता पाण्डेय जी ने आगे कहा कि शिक्षा का यह धर्म है कि वह सामाजिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करे। समाज को नित–नूतन बनाऐ रखे। मानव को मनुष्य बना सके। प्रकृति का रक्षण कर सके। ऐसी शिक्षा नीति तभी बनायी जा सकेगी जब शिक्षा के दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रीय आधार के बीच यथोचित समन्वय बनाया जा सके।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में योगासनों एवं प्राणायाम के अभ्यास कराए गये। तीसरे सत्र में योग्य शिक्षण पद्धति में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग विषय पर समूह चर्चा के साथ शिक्षण पद्धति का माडल तैयार किया गया। कार्यशाला में बी0एड0 के सभी शिक्षक एवं विद्यार्थी सम्मिलित हुए। प्राचार्य डॉ प्रदीप राव ने अतिथियों का स्वागत एवं आभार किया।

(प्रकाश प्रियदर्शी)

सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी